ओम् शान्ति 25-07-13 मधुबन

प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– गुल़्ज़ार दादी

आज अमृतवेले अपने प्यारे बापदादा के पास जाना हुआ। सदा के सदृश्य पहले दूर से दृष्टि का भाग्य मिलता है। वह दृष्टि लेते सम्मुख पहुँच गई, फिर और अमूल्य बाहों की झूले में झूल रही थी। वह अतीन्द्रिय सुख का अनुभव तो आप जानते ही हो। कुछ समय के बाद मीठा बाबा बोले मेरे दिल की तख्तनशीन बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं मुस्कुराई और बोली, मीठा बाबा आज तो आपके सिकीलधे डबल विदेशी बच्चों के दिल की याद-प्यार लाई हूँ। सब बच्चे स्नेह के झूले में खूब झूल रहे है। हर एक यह गीत गा रहा है - वाह बाबा वाह! वाह मीठा बाबा वाह! और सबके दिल के अन्दर यही उमंग है अब तो बाप को भी विश्व में प्रत्यक्ष करना ही है, जो सब कहे हमारा बाबा आ गया। बापदादा मुस्कुराये और बोले बापदादा के पास भी बच्चों का उमंग पहुँच रहा है। बाप भी दिल में कह रहे है वाह बच्चे वाह! बापदादा सर्व बच्चों का भाग्य देख रहे है। एक तो सर्व खजानों के मालिक हैं, दूसरा स्व-राज्य के मालिक है। दोनों मालिकपन हर बच्चे को बापदादा द्वारा मिला है। बालक भी हैं और मालिक भी है। मेरा बाबा कहा और बाप ने भी मेरा बच्चा कहा तो बालक और मालिक दोनों अनुभव कर रहे हैं? अब तो बच्चों को देख बापदादा बहुत खुश होते हैं। हर मुख्य स्थान में सेवा अच्छी चल रही है। अपनी जनक बच्ची भी पालना अच्छी दे रही है। मूल बात है सदा खुश रहना है और खुशी बांटना है। वह पुरुषार्थ कर आगे बढ़ रहे है। बापदादा भी बच्चों को देख खुश है कि वाह मेरे कल्प पहले के अधिकारी बच्चे, अपना अधिकार ले रहे है।

इसके बाद बापदादा ने मुख्य निमित्त बच्चों का आवाह्न किया, सब सामने आ गये। हर एक बहुत बहुत लव में लीन थे। बापदादा ने हर एक को बहुत प्यार की दृष्टि दी, वह दृष्टि इतनी पावरफुल थी जो सब सेकेन्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव कर रहे थे। बाबा ने एक-एक को गोदी में ले कर इतना प्यार किया जो सबके मुख से यही निकल रहा था कि इतना प्यार करेगा कौन। सब प्यार में लीन हो गये। इसके बाद बाबा बोले, अब तो अपने स्थान पर जाना है ना! सब उसी स्नेह में समाते बाबा से दृष्टि लेते हुए अपने स्थान में पहुँच गये। ओम् शान्ति।